

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन-2

✿ डॉ. समणी हिमप्रज्ञा

वायु-प्रदूषण

वैश्विक स्तर पर वायु प्रदूषण जान लेवा सिद्ध हो रहा है। इसी वजह से दिल और सांस संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ने से मृत्युदर पर असर पड़ रहा है। बढ़ते वायु प्रदूषण से देश के शहर एक बड़े गैस चेम्बर के रूप में नजर आ रहे हैं, जिससे लोग काल के मुख में समा रहे हैं। प्रदूषण से आम जनता की सेहत पर पड़ने वाले प्रभावों और होने वाली मौतों की भयावहता की तस्वीर सामने आई है। इस रिपोर्ट को हेल्थ अफेक्ट इंस्टीट्यूट और यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन स्थित इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मेट्रिक्स एण्ड इवेल्युशन ने संयुक्त तौर पर तैयार किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों पर आधारित एक रिपोर्ट में 195 देशों के 1990 से 2015 तक के विस्तृत आंकड़े हैं। इनके आधार पर मौतों की संख्या को निकाला जाता है। रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2015 में पूरी दुनिया में 42 लाख लोगों की मौत वायुप्रदूषण की वजह से हुई है। इनमें से बावन फीसदी मौतें भारत और चीन में हुईं। भारत में प्रतिवर्ष करीब दस लाख लोगों की मौत वायु प्रदूषण से होती है। उल्लेखनीय है कि नाइट्रोजन, सल्फर, ऑक्साइड, कार्बन तथा खासकर पीएम 2.5 जैसे वायु प्रदूषण तत्वों को विश्व में मौत का कारण माना जाता है।

वायु का प्रदूषण आज के युग की एक ज्वलन्त समस्या है। सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात हुआ है कि पिछले वर्षों में वायुमण्डल में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा में 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा वातावरण में निरन्तर बढ़ती रही तो मनुष्य एवं जानवरों के शरीर हेतु आवश्यक प्राणवायु का अनुपात घट जायेगा। घटते अनुपात के कारण महानगरीय इलाकों में लोगों के श्वास रोग और नेत्र रक्तिमता बढ़ रही है।



वायुमण्डल में सन् 1870 की अपेक्षा ग्यारह प्रतिशत कार्बनडाई ऑक्साइड अधिक है। नैसर्गिक शुद्ध हवा का प्रदूषण मुख्यतः ईंधन के जलने तथा विविध औद्योगिक प्रक्रियाओं से हवा में छोड़े जाने वाले पदार्थों के कारण होता है। कारखानों, मोटरकार आदि के धुंओं में कार्बनडाईऑक्साइड ही नहीं, धातुओं के कण, कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड आदि हानिकारक तत्व होते हैं। धातु कणों में सीसा, पारा तांबा आदि धातु होते हैं।

पश्चिमी जर्मनी में हुए अनुसंधान के अनुसार मोटरकारों द्वारा छोड़े गए धुएं में एवं आस-पास के वातावरण में पाये जाने वाले सीसे की मात्रा में सीधा संबंध है। एक अनुमान के अनुसार कारें लगभग 5 लाख टन सीसा प्रतिवर्ष वायुमंडल में छोड़ती हैं। सीसे के जहर से मानव मस्तिष्क तन्तु नष्ट हो जाते हैं। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार दमा, कफवृद्धि आदि फेफड़ों की बीमारियों की वायु-प्रदूषण से वृद्धि होती है। अमेरिकन पब्लिक हेल्थ एसोसिएशन के अध्ययन के अनुसार ऐसे

वातावरण में पांच लाख बच्चों को दमा का असर दुगुना दिखाई दिया तथा त्वचा रोग का प्रभाव चार गुना ज्यादा दिखाई दिया है।

वायु प्रदूषण का प्रभाव केवल मनुष्य को ही नहीं, सभी जीव जंतुओं को प्रभावित करता है। शलभ, मधुमक्खी आदि अनेक प्रकार के कीट इस वायु प्रदूषण से भारी संख्या में काल के ग्रास बनते जा रहे हैं। वनस्पति जगत् भी इसके दुष्प्रभाव से बच नहीं पाया है। प्रकृति का हर कण एक दूसरे से जुड़ा हुआ है इसलिए एक का दुष्प्रभाव सम्पूर्ण सृष्टि को प्रभावित करता है।

ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण भी आज के युग की बहुत बड़ी समस्या है। यातायात की गड़गड़ाहट, मशीनों की खड़खड़ाहट, विमानों की तेज आवाज, पंखे रेडियो और अन्य यन्त्रों का कोलाहल। इस बढ़ती हुई अनियन्त्रित ध्वनि पर नियन्त्रण की आवश्यकता है, क्योंकि उच्च स्वर में तरंगित होने वाली तरंगें मानव के लिए मौत का कारण बन रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार एक व्यक्ति की सुनने की क्षमता 30 से 90 डेसिबल होती है। जब इनसे अधिक डेसिबल वाली ध्वनि कान के पर्दे से टकराती है जिससे पर्दे के प्रतिरोधात्मक प्रक्रिया स्वरूप काफी शक्ति खर्च करनी पड़ती है। यदि बार-बार ऐसा होता है तो पर्दे की क्षमता कम हो जाती है

या समाप्त। जेट विमान का ध्वनि प्रमाण 130 से 150 डेसिबल है। अन्य हवाई जहाजों का ध्वनि प्रदूषण 120 से 130 डेसिबल है। गाड़ी के हॉर्न का ध्वनि प्रमाण 110 डेसिबल है। विश्व का सबसे बड़ा हवाई अड्डा लंदन में है। जिसका नाम है "हीथ्रो"। वहां पर सबसे अधिक हवाई जहाज उतरते हैं, फलस्वरूप उस क्षेत्र के आस-पास रहने वाले लोगों में पागलपन, बहरापन, पक्षाघात जैसे रोगों की वृद्धि हो रही है। डॉ. हेटिस के अनुसार उच्च ध्वनि से आर. बी. सी. आपस में टकराते हैं और एक दूसरे से

चिपक जाते हैं, जिसका स्थाई इलाज भी नहीं है। ध्वनि प्रदूषण के कारण ज्ञान तन्तु भी निष्क्रिय हो जाते हैं। पर्यावरण विशेषज्ञों का कथन है कि ध्वनि प्रदूषण की समस्या इसी प्रकार बढ़ती रही तो पागलों की संख्या का परिमाण बढ़ सकता है। भगवान् ने उसके समाधान हेतु वाणी संयम का उपदेश दिया।

वनस्पति प्रदूषण

प्राणी जगत् की अनिवार्य अपेक्षा है-हवा, पानी और भोजन। मनुष्य पेड़-पौधों से ऑक्सीजन ग्रहण करता है। वृक्ष ऑक्सीजन छोड़ना बंद कर दे तो सम्पूर्ण प्राणी जगत् का जीवन संकट में पड़ सकता है। वृक्षों का अस्तित्व भी छोटे-छोटे कीड़ों पर टिका हुआ है जो उनके लिए खाद्य तैयार करते हैं। चींटी, दीमक आदि छोटे-छोटे कीड़ों जड़ों तक हवा, नमी और रोशनी पहुंचाने में योगभूत बनते हैं। इसलिए किसी का भी अस्तित्व स्वतंत्र नहीं है। एक के अस्तित्व को क्षति पहुंचाने का अर्थ है अनेक के जीवन को खतरे में डालना।

आज वनस्पति का विनाश भी अत्यधिक मात्रा में हो रहा है। आदमी जंगल काट रहा है। जंगलों के काटने से वर्षा का संतुलन बिगड़ रहा है। कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि। जंगलों की सघनता कम होने से देश की करोड़ों टन उपजाऊ मिट्टी नदियों के साथ बहकर समुद्र में चली जाती है। आणविक विकिरणों के सोखने का उपाय वनस्पति है, वह खत्म हो रही है। कागज के बड़े-बड़े कारखानों लग रहे हैं और उनके लिए जंगलों का काटना भी जरूरी हो गया है, यह जरूरत पर्यावरण के प्रदूषण का कारण बन रही है। कुछ वर्षों पहले जोधपुर विश्वविद्यालय में वानस्पतिक प्रदूषण के संबंध में आयोजित एक गोष्ठी में बोलते हुए प्रो. जी. एम. जौहरी ने कहा था-पेड़ पौधों से ही पृथ्वी पर जीवन है। वनस्पति के बिना जैविक प्रक्रिया असंभव है। जैविक संतुलन बनाए रखने के लिए पौध संरक्षण आवश्यक है। वनस्पति मनुष्य के लिए अनेक दृष्टियों से वरदान है। संसार में जितना प्राण वायु में है, उसका बहुत बड़ा भाग वनस्पति से ही उत्पन्न होता है। चूंकि मानव जीवन वनस्पति पर आधारित है, वही मनुष्य की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। प्राणवायु की दृष्टि से भी पौधों को संरक्षण दिये जाने की आवश्यकता है। ईसा पूर्व की शताब्दियों में अनेक प्रकार के फल उपलब्ध होने के संकेत आज भी मिलते हैं। लेकिन संरक्षण के अभाव में लुप्त हो गये। आज वनस्पति सम्पदा का जिस प्रकार से विनाश हो रहा है, वह चिन्ता का विषय है। पेड़-पौधों की लगभग 500 जातियां नष्ट हो गईं। अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी गरुड़ है। उसकी संख्या क्रमशः घटती जा रही है। कारण की खोज करने से ज्ञात हुआ कि पौधों की कीड़ों से रक्षा करने के लिए डी.डी.टी. आदि रासायनिक द्रव्यों का प्रयोग किया गया, जिससे पौधों की स्वाभाविकता नष्ट हो गई। गरुड़ पक्षी को प्राकृतिक भोजन न मिलने के कारण प्रजनन की क्षमता समाप्त हो गई।

लेबनान के पर्वतों के बारे में यह बताया गया कि ये पर्वत आज से 5000 वर्ष पूर्व देवदार, चीड़, बांज और जूनिफर के जंगलों से ढके थे, किन्तु आज ये पर्वत सहारा रेगिस्तान की तरह अन-उपजाऊ वीरान पड़े हैं। इनका विनाश भी एक लम्बी कहानी से जुड़ा हुआ है। मिस्र के निवासियों ने इन जंगलों को इमारतों और जहाजों के निर्माण के लिए पूर्णतया धराशायी कर दिया। बचे हुए जंगलों को ब्रिटिश सैनिकों ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय रेल लाइनें बिछाने के लिए नष्ट कर दिया। धरातल से हरे आवरण के नष्ट हो जाने से मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों में ह्रास हो रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न समस्याएं

पर्यावरण प्रदूषण केवल समस्या नहीं है, अपितु अनेकानेक समस्याओं का जनक है, मूल है। इसके कारण विश्व में अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई हैं, जैसे-ग्लोबल-वार्मिंग, ओजोन परत में छिद्र, वातावरण में बदलाव, स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याएं, स्वच्छ जल, अन्न तथा वायु से सम्बन्धित समस्याएं आदि। पर्यावरण प्रदूषण से स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याएं बढ़ती जा रही है। अनेक नई-नई बीमारियां जन्म ले रही है। आज पूर्ण रूप से बहुत कम व्यक्ति स्वस्थ नजर आ रहे हैं।

अन्न, जल, वायु आदि भी दूषित हो रहे हैं। शुद्ध अन्न, जल, फल, सब्जी आदि की प्राप्ति असंभव हो गई है। सभी शरीर को पोषण देने की बजाय शोषण का कार्य कर रहे हैं। पानी की भी विकराल समस्या सबके सामने है-यह बताने की आवश्यकता नहीं है। इस विषय में विशेषज्ञों का कहना है कि तीसरा विश्वयुद्ध जल संकट के कारण होगा। सांस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन नहीं मिल रही है। कुछ महीनों पूर्व बढ़ते हुए प्रदूषण को देखते हुए नवभारत टाइम्स (हिन्दी दैनिक, नई दिल्ली) में समाचार छपा था कि दिल्ली गैस चेम्बर बन गई है।

विलुप्त होती जाती प्रजातियां

धरती का तापमान निरंतर बढ़ रहा है इसलिए पशु-पक्षियों की कई प्रजातियां लुप्त हो रही हैं। जंगलों से शेर, चीते, बाघ आदि गायब हो गए हैं। भारत में 50 करोड़ से अधिक जानवर है, जिनमें से प्रतिवर्ष पांच करोड़ से अधिक मर जाते हैं और साढ़े छः करोड़ नये जन्म लेते हैं। वन्य प्राणी प्राकृतिक संतुलन स्थापित करने के लिए सहायक होते हैं। उनकी घटती संख्या पर्यावरण के लिए घातक है, जैसे गिद्ध जानवर की प्रजाति वन्य जीवन के लिए वरदान है पर 90 प्रतिशत गिद्ध मर चुके हैं। पर्यावरण की दृष्टि से वन्य प्राणियों की रक्षा अनिवार्य है।

वैज्ञानिकों का कथन है कि प्रकृति पूर्ण रूप से साफ-सुथरी है। इसमें किसी प्रकार की गन्दगी नहीं है। प्रकृति में सब जीव-जन्तु, प्राणी तथा वनस्पति जगत् मिलजुल कर रहते हैं, किन्तु मानव के हस्तक्षेप से ही प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। प्रकृति के संतुलन के बिगड़ने की दशा को ही प्रदूषण कहा जाता है। अमेरिकी राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (1966) के अनुसार वायु, पानी, मिट्टी, पौधे, पेड़ और जानवर-सभी मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। ये सभी पारस्परिक संतुलन बनाये रखने के लिए एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, जिसे परिस्थिति विज्ञान संबंधी संतुलन कहते हैं। जब सीमा से अधिक विकास के लिए प्रकृति का उपयोग किया जाता है तो पर्यावरण में या वातावरण में कुछ परिवर्तन होता है, उस परिवर्तन से ही असंतुलन पैदा होता है और इसी असंतुलन से प्रदूषण उत्पन्न होता है।

जैन दर्शन में पर्यावरण संरक्षण के उपाय

भगवान् महावीर ने दसवैकालिक सूत्र में कहा-पृथ्वी, पानी, वायु और वनस्पति इन सबकी स्वतंत्र सत्ता है। यह सच्चाई समझ में आने पर ही मनुष्य सबके प्रति अतिक्रमण और अत्याचार से बच सकता है। आज बहुत अतिक्रमण हो रहा है। मनुष्य चाहे जैसा इनके साथ व्यवहार करता है। क्या मनुष्य ने कभी ध्यान दिया कि आवश्यकता से अधिक वनस्पति नहीं काटना चाहिए? आवश्यक काम करने के लिए कुछ नीम पत्तियां तोड़नी है तो पूरी शाखा क्यों तोड़े? पानी से हाथ धोना है, एक गिलास पानी से काम चल सकता है, पर वहां कई लोटे पानी का अपव्यय क्यों? स्नान करने में एक बाल्टी पानी पर्याप्त है फिर भी नल को खोलकर घंटों तक अनावश्यक पानी क्यों बहा देते हैं? क्या यह अतिक्रमण नहीं है? ये प्रश्न जब मनुष्य के मस्तिष्क में उभरने लगेंगे तभी पर्यावरण की समस्या के समाधान की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

जब तक अज्ञानता की अनुभूति नहीं होगी,
तब तक व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता।।

- आचार्यश्री महाश्रमण

श्रद्धावनत

हनुमानमल सुराणा

राजगढ़ (कोलकाता)

अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण

जैन धर्म जीवन का अस्तित्व केवल मनुष्यों, पशुओं या कीड़े-मकोड़ों में ही नहीं मानता अपितु पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा तथा वनस्पति-इन पंचभूतों में भी उसका अस्तित्व स्वीकार करता है। आयारो में सूत्रकार कहते हैं कि जो पृथ्वीकायिक, जलकायिक, वायुकायिक तथा वनस्पतिकायिक जीवों का अस्तित्व अस्वीकार करता है, वह अपनी आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करता है। इसी प्रकार अग्निकायिक आदि जीवों के सन्दर्भ में भी जानना चाहिए। जैन आगम आयारो में पृथ्वीकायिक, अपकाय आदि पांच स्थावर जीवों के बारे में विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है।

महावीर ने कहा जो व्यक्ति नाना प्रकार के शस्त्रों से पृथ्वी, पानी, वायु तथा वनस्पति जीवों की हिंसा करता है वह न केवल पृथ्वीकायिक आदि जीवों की हिंसा करता है किन्तु नाना प्रकार के अन्य जीवों की भी हिंसा करता है। यह हिंसा मनुष्य के अहित के लिए होती है। “यह हिंसा अबोधि के लिए होती है। यह हिंसा ग्रन्थि है, मोह है, मृत्यु है, नरक है।”

हिंसा संबंधी दुष्परिणामों को देखते हुए महावीर ने मुनि को हिंसा संबंधी कार्यों में व्यापृत न होने का निर्देश दिया। लेकिन एक गृहवासी हिंसा से सर्वथा उपरत हो जाए, यह संभव नहीं है, इसलिए उसके लिए एक सीमारेखा निर्धारित की। एक गृहस्थ आवश्यक हिंसा से नहीं बच सकता लेकिन अनर्थ हिंसा से अवश्य ही बच सकता है।

आज जो पर्यावरण का धीमा जहर मनुष्य को निगलने के लिए तैयार है, उसका कारण है-इस सीमा रेखा का अतिक्रमण। क्योंकि संयम की सीमा में रहने वाला व्यक्ति अनपेक्षित भूमि की खुदाई नहीं कर सकता। सीमा का अतिक्रमण नहीं होने से ही पर्यावरण की समस्या समाप्त हो सकती है।

पर्यावरण की समस्या के समाधान के लिए जैनाचार्यों ने व्रतों का उनके अतिचारों का निर्माण किया है। जैनग्रन्थों में ‘अनर्थदण्ड’ एक शब्द आता है। भगवान् महावीर ने श्रावक के लिए पांच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत का विधान किया, जिनमें एक गुणव्रत है-अनर्थदण्डव्रत-इसका तात्पर्य है कि अनावश्यक ऐसी चेष्टाएं करें, जिसमें देश और राष्ट्र की सम्पत्ति का नुकसान हो, अनावश्यक जल का अपव्यय और अनावश्यक भूमि का खनन करना, अनावश्यक वनस्पति का छेदन करना, अनावश्यक यात्रा करना, अनावश्यक बिजली का अपव्यय आदि अनर्थ क्रियाएं हैं, इनके प्रति सावधानी रखने से पर्यावरण की समस्याएं कम हो सकती हैं।

अनर्थदण्ड के पांच भेदों में एक भेद प्रमादचर्या भी है। निष्प्रयोजन पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं वनस्पति का छेदन करना प्रमादचर्या कहलाता है। इस व्रत के अनुपालन से दैनिक जीवन में पानी का अपव्यय कम होता है। जैनाचार्यों ने अनर्थदण्डविरति के पांच अतिचारों में अतिप्रसाधन एवं समीक्षाधिकरण का भी उल्लेख किया है। जितने पदार्थों से आवश्यकता की पूर्ति होती है उससे अधिक संग्रह करना अतिप्रसाधन कहलाता है तथा बिना प्रयोजन के ही किसी कार्य का अधिक आरम्भ करना असमीक्षाधिकरण कहलाता है। इस प्रकार जैन दर्शन में जल के असीमित प्रयोग एवं संग्रह का निषेध हजारों वर्ष पूर्व ही कर दिया था।

परिग्रहपरिमाण व्रत और पर्यावरण संरक्षण

इस व्रत को इच्छा परिमाण व्रत भी कहा जाता है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छाओं को सीमित करें। आवश्यकता से अधिक अन्न, जल, वैभव, धन के संग्रह से बचे। यह व्रत मनुष्य की अनंत इच्छाओं को सीमित करता है इससे जहां एक ओर प्रकृति एवं पर्यावरण का हित होता है वहीं दूसरी ओर प्रकृति के सीमित संसाधनों का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग को समान रूप से प्राप्त हो सकता है।

भोगोपभोगपरिमाण व्रत और पर्यावरण संरक्षण

भोगोपभोगपरिमाण व्रत इच्छाओं और आवश्यकताओं को और अधिक संकुचित करता है। इस व्रत के पालन से दैनिक जीवन में भोग उपभोग की सामग्री का उपयोग क्रमशः घटते हुए न्यूनतम स्तर तक पहुंच जाता है। पानी की अत्यधिक खपत वाले कूलर आदि का उपयोग कम से कम किया जाय तो बहुत मात्रा में पेय जल का संरक्षण किया जा सकता है। इसी प्रकार दैनिक जीवन में दुपहिया और चारपहिया वाहनों के बढ़ते उपयोग से कार्बन का उत्सर्जन बढ़ता जा रहा है और इससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या बढ़ती जा रही है। ग्लोबल वार्मिंग जल संकट का एक प्रमुख कारण है। प्रस्तुत व्रत के द्वारा दैनिक जीवन में वाहनों के प्रयोग को अत्यंत कम कर सकते हैं। परिग्रहपरिमाण व्रत एवं भोगोपभोगपरिमाण व्रत जैन दर्शन के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं जो प्रकृति के संतुलन और संसाधनों के पुनर्चक्रण में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। इस सन्दर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का यह कथन उल्लेखनीय है कि यह पृथ्वी मनुष्य की जरूरतें पूरी करने में तो सक्षम है, किन्तु उसके लालच को पूरा नहीं कर सकती।

भगवान् महावीर ने सीमाकरण का सूत्र दिया। उन्होंने कहा-सीमाकरण करो। उन्होंने गृहस्थ के लिए जो आचार संहिता दी, उसमें एक व्रत है-उपभोग का सीमाकरण। उनके समय अनेक लोगों ने उपभोग का सीमाकरण किया। महावीर का एक श्रावक था गृहपति आनंद। वह बहुत बड़ा किसान था, बहुत संपत्ति थी जिसकी संपत्ति की तुलना आज के परिप्रेक्ष्य में की जाये तो उसे खरबपति कहा जा सकता है।

दिग्परिमाण व्रत और पर्यावरण संरक्षण

भगवान् महावीर ने श्रमणोपासक के लिए दिग्परिमाणव्रत का निर्देश दिया। जब व्यक्ति चारों दिशाओं में गमनागमन की सीमा करता है तब वह स्वतः अति आवागमन से बच जाता है। आज यह संकल्प विश्व की पर्यावरण सम्बन्धी समस्या का एक समाधान है। बढ़ते हुए प्रदूषण पर अंकुश है। इस व्रत का या अणुव्रत को स्वीकार करने का अर्थ है-संयम। इस व्रत से समय और शक्ति का बचाव होता है। वाहनों के उपयोग की सीमा होने से बढ़ते हुए प्रदूषण पर रोक लग सकती है।

वनों की अन्धाधुन्ध कटाई भी ओजोन के लिए महाकाल के रूप में प्रकट हो रही है। पहले चारों ओर हरे भरे खेत दिखाई देते थे जो केवल पृथ्वी का ही सौन्दर्य नहीं था, जन-जीवन का भी सौन्दर्य है। इन हरे भरे वृक्षों पर चोट करने का अर्थ है ओजोन पट्टी पर प्रहार करना। दूसरी ओर कलकारखानों और बिजली घरों से निकली सल्फर डाईऑक्साइड, चिमनियों से निकलने वाला धुंआ, यान-वाहनों से निकलने वाली दूषित गैसों जो सारे पर्यावरण को दूषित बना रही है। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रत्येक गैलन पेट्रोल के जलने से तीन पौंड कार्बन मोनोऑक्साइड, पंद्रह पौंड नाइट्रोजन मोनोऑक्साइड एवं अन्य विषैली गैसों उत्पन्न होती हैं, जिससे 80 हजार से दो लाख फुट वायु प्रदूषित होती है। इस दूषित वायु से ओजोन में छिद्र हो रहे हैं जिससे सूर्य का ताप सीधा धरती पर आ रहा है। सूर्य के ताप का सीधा धरती पर आने का अर्थ है-छोटे-छोटे जीव जन्तुओं का अगली यात्रा के लिए प्रस्थान, त्वचा का झुलसना, कैंसर जैसे असाध्य रोगों का प्रादुर्भाव, निमोनिया, ब्रोंकाईटीस्ट तथा श्वास जैसे रोगों में वृद्धि। प्रकृति के विनाश का अर्थ है-सम्पूर्ण जन-जीवन का विनाश। वस्तुतः यह चिन्ता का विषय है। इस पर गहराई से सोचने की आवश्यकता है। पर्यावरण विज्ञान की वास्तविकता को समझना जरूरी है, क्योंकि पदार्थ की सीमा है, उपभोक्ता ज्यादा है, अतः अनावश्यक इच्छा को न बढ़ाएं। संयम से प्रदूषण की समस्या को मिटाया जा सकता है। इस संदर्भ में अणुव्रत का घोष महत्त्वपूर्ण है-संयमः खलु जीवनम् - संयम ही जीवन है।